शोध-पत्र

गबन : एक यथार्थवादी उपन्यास

सुनीता खुराना*

'गबन' प्रेमचंद का घटना और चरित्र प्रधान उपन्यास है। समस्त घटनाएं और चरित्र एक सामंजस्यपूर्ण स्थिति में अवस्थित हैं। नंददुलारे वाजपेयी के अनुसार ''गबन में परिस्थिति और चरित्र निर्माण का एक दूसरे से अविच्छेद संबंध स्थापित हो गया है। परिस्थिति व चरित्रों का अंतवर्तित्व इस कृति में दिखाई देता है अर्थात् परिस्थितियों का पात्रों पर व पात्रों का परिस्थितियों पर कैसा स्वाभाविक प्रभाव पड़ता है और वे एक दूसरे से अविच्छन्न रहकर किस प्रकार विकसित होते हैं, इसका सुन्दर स्वाभाविक निरुपण इस उपन्यास में है।"[1]

उपन्यास में प्रेमचंद ने मध्यवर्ग की स्थिति, स्त्रियों की आभूषणप्रियता, वृद्धविवाह, स्वतन्त्रता आंदोलन आदि का वर्णन किया है। नारी वर्ग किस तरह से आभूषणप्रिय होता है और यह आभूषणप्रियता और प्रदर्शन की भावना जीवन के लिए अभिशाप बन जाती है-इसका यथार्थ चित्रण हुआ है। उपन्यास का प्रत्येक स्त्री पात्र आभूषणप्रिय है। जालपा को बचपन से ही चद्रंहार पाने की लालसा है। विवाह में हार न मिलने पर वह खिन्न रहने लगती है पर रमानाथ येन-केन-प्रकारेण उसे अन्य आभूषण उपलब्ध करा देता है। जालपा की मां मानकी बढ़ती उम्र में भी चंद्रहार खरीदती है। रतन को गहनों से इतना प्रेम है कि उसे बाज़ार में आने वाला हर नई तरह का गहना चाहिए। रमानाथ की मां को आभूषणों से प्रेम तो है पर अपने कर्त्तव्य के आगे वह गहनों के शौक को तिलांजलि दे देती है। बुढ़िया जग्गो की आभूषणप्रियता के कारण देवीदीन को जेलयात्रा भी करनी पड़ती है। प्रेमचंद आभूषणप्रियता की समस्या के विषय में लिखते हैं:-

''गहनों का मर्ज न जाने इस दरिद्र देश में कैसे फैल गया। जिन लोगों के भोजन का ठिकाना नहीं वे भी गहनों के पीछे प्राण देते हैं। हर साल अरबों रुपए केवल सोना-चांदी खरीदने में व्यय हो जाते हैं। संसार के और किसी देश में इन धातुओं की इतनी खपत नहीं। ... यहां धन श्रृंगार में खर्च होता है। उससे उन्नति और उद्यम की जो महान शक्तियां हैं उन दोनों का अंत हो जाता है। बुरा मरज बहुत ही बुरा।"[2]

भारतीय समाज में विशेषत: मध्यवर्ग में मिथ्या प्रदर्शन की प्रवृत्ति बहुतायत में होती है। रमानाथ की बारात में इस मिथ्या प्रदर्शन की समस्या को उठाया गया है। रिश्वत का विरोध करने वाले दयानाथ भी प्रदर्शन के चलते धन का अपव्यय करते हैं। रमानाथ बारात की चकाचौंध में तिलक का धन व्यय कर देता है पर पिता मुंह से एक शब्द भी नहीं कहते। इस व्यर्थ के प्रदर्शन के परिणामस्वरूप जौहरी को पैसे देने के लिए रमानाथ को पत्नी और दयानाथ को बहू के गहने चोरी करने पड़ते हैं। जालपा को गहनों से इतना प्रेम है कि उनके बिना उसे घर से बाहर निकलने में संकोच महसूस होता है। रमानाथ वकील इन्दुभूषण को घर पर आमंत्रित करता है और पिता दयानाथ भी इस समय अंग्रेज़ी शानोशौकत में रंगे नज़र आते हैं। स्पष्ट है कि मध्यवर्ग मिथ्याप्रदर्शन के रोग से बुरी तरह ग्रस्त है। प्रदर्शन पर व्यय किए जाने वाले पैसे से शिक्षा प्राप्त की जा सकती है, जीवन का उत्थान किया जा सकता है।

1930 में प्रकाशित 'गबन' उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद ने युगीन परिवेश को साकार रूप प्रदान किया है। यह वह युग था जब स्वतंत्रता के लिए आंदोलन चल रहे थे। स्वतंत्रता सेनानी प्राणों पर खेलकर राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेते थे। इन्हें पकड़ने की मुहिम में ब्रिटिश सरकार लालच देकर व्यक्तियों को मुखबिर बनाकर अदालत में पेश करती थी और मुखबिर बनाकर निरपराध व्यक्तियों के खिलाफ झूठे केस बनाती थी। पुलिस झूठे मुखबिर बनाकर निरपराध व्यक्तियों को फांसी पर चढ़ाने में भी

* 3683, सेक्टर-231 गुड़गाँव, हरियाणा, Email ID : sunitadelhi3010@gmail.com

. हिचकती थी। उपन्यास में निर्दोष दिनेश और 15 अन्य व्यक्तियों को रमानाथ की मुखबिरी से सजा दे दी जाती है। उपन्यास में लेखक ने पुलिस की करतूतों का बड़ी सूक्ष्मता से पर्दाफाश किया है। उपन्यास में देवीदीन के माध्यम से स्वतन्त्रता संबंधी प्रश्नों को उठाया गया है। देवीदीन विदेशी वस्तुओं की बजाय स्वदेशी वस्तुओं को अपनाता है। वह कहता है–

"जिस देश में रहते हैं जिसका अन्न जल खाते हैं उसके लिए इतना भी न करें तो जीने को धिक्कार है। दो जवान बेटे सुदेशी को भेंट कर चुका हूँ भइया।"[3]

वह जानता है कि स्वदेशी वस्तुओं में पैसा ज्यादा खर्च करना पड़ता है किंतु उसे इस बात का संतोष है कि पैसा रहता तो अपने ही देश में है। देवीदीन स्वदेशी को राजनीतिक और आर्थिक दोनों स्तरों पर जोड़कर देखता है। वह 'सुराज' का अर्थ भली–भांति जानता है और ऐसे आंदोलन का समर्थक है जिससे देश को शीघ्र से शीघ्र मुक्ति मिल सके। इस समय तक भारतीय जनता नेताओं और ब्रिटिश शासकों के झूठे वायदों को खूब समझ चुकी थी। वह कहता है:–

"एक बार यहां एक बड़ा भारी जलसा हुआ। एक साहब बहादुर खड़े होकर खूब उछले कूदे। जब वे नीचे आए तो मैंने उनसे पूछा–साहब सच बताओ जब तुम सुराज का नाम लेते हो तो उसका कौन सा रूप तुम्हारी आंखों के सामने आता है। तुम भी बड़ी–बड़ी तलबें लोगे, तुम भी अंग्रेज़ों की तरह बंगलों में रहोगे। ...इस सुराज से देश का क्या कल्याण होगा। तुम्हारी और तुम्हारे भाईबन्दों की ज़िंदगी भले ही आराम और ठाट से गुज़रे पर देश का कोई भला न होगा।"[4]

देवीदीन उस कृषक और श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ–साथ आर्थिक सुधार की भी आकांक्षा रखता है।

युगीन समस्याओं में से एक समस्या बेरोज़गारी की थी। रमानाथ एक बेरोज़गार पात्र है। रमेश बाबू इस समस्या की ओर इंगित करते हुए कहते हैं:–

"इसे जितना आसान समझ रहे हो उतनी आसान नहीं है। अच्छे–अच्छे धक्के खा रहे हैं।"[5]

देश में बेरोज़गारी की स्थिति को देखते हुए शिक्षित युवावर्ग को कम मेहनताने पर काम करना पड़ता है। विवशता में वे अपने स्तर से कम के रोज़गार को भी स्वीकार कर लेते हैं। प्रेमचंद लिखते हैं:–

"क्या तुम समझते हो घर बैठे जगह मिल जाएगी? महीनों दौड़ना पड़ेगा, महीनों। बीसियों सिफारिशें लानी पड़ेंगी। सुबह शाम हाज़िरी देनी पड़ेगी। क्या नौकरी मिलना आसान है।"[6]

गबन के आर्थिक स्तर पर कमज़ोर पात्र रोज़मर्रा की ज़रूरतों के लिए चिंतित रहते हैं। रोचक बात यह है कि केवल मध्यवर्ग ही आर्थिक परेशानियों का शिकार है। इन्दुभूषण वकील आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है। देवीदीन निम्न वर्ग से है किंतु एक दिन में 50 गिन्नियां इकट्ठी कर लेता है। वह नौकरी की अपेक्षा अपना उद्योग चलाने में भरोसा करता है। उपन्यास में जातिप्रथा पर भी प्रहार किया गया है। खटिक जाति की जग्गो रमानाथ को अपना खाना अलग बनाने पर ज़ोर देती है तो रमनाथ कहता है:–

"जिसकी आत्मा बड़ी हो वही ब्राह्मण है।"[7]

जालपा और रमानाथ देवीदीन और जग्गो को माता–पिता की तरह सम्मान देते हैं। उपन्यास में वृद्ध–विवाह और विधवाओं की संपत्ति संबंधी अधिकार को लेकर अनेक प्रश्न उठाए गए हैं। इन्दुभूषण के मृत्योपरांत सारी संपत्ति रतन के देवर द्वारा हड़प लिए जाने पर रतन की दशा का सजीव चित्रण किया गया है। केवल प्रश्न ही नहीं उठाए गए बल्कि उनके समाधान भी प्रस्तुत किए गए हैं–कहीं प्रत्यक्ष रूप से और कहीं अप्रत्यक्ष रूप से। ये समाधान आज भी पूर्णत: प्रासंगिक हैं और अपना महत्व रखते हैं। रतन का कथन संपत्ति हस्तगत किए जाने के बाद संयुक्त परिवार में विधवा स्त्रियों को अपना भविष्य सुरक्षित करने की प्रेरणा देता है:–

"बहनों! किसी सम्मिलित परिवार में विवाह मत करना और अगर करना तो जब तक अपना घर अलग न बना लो चैन की नींद मत सोना। ... परिवार तुम्हारे लिए फूलों की सेज नहीं, कांटों की शैय्या है, तुम्हारा पार लगाने वाली नैया नहीं तुम्हें निगल जाने वाला जंतु है।"[8]

रतन के इस कथन पर उन व्यक्तियों को ध्यान देना चाहिए जो विधवा स्त्री के अधिकार को छल से छीन लेना चाहते हैं। 'गबन' में श्रमिकों की समस्या भी उठाई गई है। जो सेठ दिन रात दान करने से नहीं कतराते वे श्रमिकों का खून चूसने से परहेज़ नहीं करते। देवीदीन ऐसे सेठों की पोल खोलते हुए कहता है–"उसकी जूट की मिल है। मजदूरों के साथ जितनी निर्दयता उसकी मिल में होती है और कहीं नहीं होती, आदमी को हंटरों से पिटवाता है, हंटरों से/ चरबी मिला घी बेचकर इसने लाखों कमा लिए। कोई नौकर एक मिनट की भी देर करे तो तुरंत तलब काट लेता है, अगर साल में दो चार हजार दान न कर दे तो पाप का धन पचे कैसे?"[9]

निष्कर्षत: 'गबन' में युग की परिस्थितियां साकार हो उठी हैं। उपन्यास के अंत में पात्र सेवाव्रत धारण करते हुए सात्विक जीवन व्यतीत करते हैं। रमानाथ और जालपा खेतिहर के रूप में परिवारजनों के साथ परिश्रम करते हुए जीवन बिताते हैं। प्रेमचंद

अंत की ओर संकेत करते हुए यह कहना चाहते हैं कि इस प्रकार के सादे, श्रमपूर्ण, ईमानदारी और कर्त्तव्यपालन से परिपूर्ण जीवन में ही सच्चा सुख छिपा है।

संदर्भ सूची

1. आधुनिक साहित्य : नंददुलारे वाजपेयी, पृष्ठ 145
2. गबन : प्रेमचंद, पृष्ठ 123
3. गबन : प्रेमचंद, पृष्ठ 128
4. गबन : प्रेमचंद, पृष्ठ 129
5. गबन : प्रेमचंद, पृष्ठ 125
6. गबन : प्रेमचंद, पृष्ठ 125
7. गबन : प्रेमचंद, पृष्ठ 135
8. गबन : प्रेमचंद, पृष्ठ 148
9. गबन : प्रेमचंद, पृष्ठ 135